इकाई 6 अवलोकन*

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 प्रस्तावना

6.2 अवलोकन क्या है?

6.3 अवलोकन के प्रकार

6.4 सहभागी अवलोकन पर आधारित अध्ययन

6.4.1 आर्गोनॉट्स ऑफ द वैस्टर्न पैसिफिक

6.4.2 स्ट्रीट कॉर्नर सोसाइटी

6.5 अवलोकन तकनीकों के गुण–दोष

6.6 सारांश

6.7 संदर्भ

6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई का अध्ययन करने के बाद आप इस योग्य होंगे कि –

- अवलोकन को आँकड़ा संग्रहण की तकनीक के रूप में समझ सकें;
- अवलोकन के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या उनके प्रयोगों एवं कमियों के साथ कर सकें; तथा
- अवलोकन तकनीक के लाभ और हानियों पर चर्चा कर सकें।

6.1 प्रस्तावना

जब कभी भी हम बाजार या काम पर जाते हैं अथवा घूमते–फिरते हैं तो आमतौर पर वस्तुएँ, लोग घटनाएँ और बहुत कुछ देखते हैं। प्रायः हम उन्हें देखते हैं और फिर अपने काम में लग जाते हैं। कभी–कभी, बहरहाल, हम उन्हें मन ही मन किसी प्रयोजन के साथ गहन दृष्टि डालकर ध्यानपूर्वक देखते हैं। ऐसा हमारी रुचि अथवा किसी अन्य कारण की वजह से हो सकता है। जब हम कोई उद्देश्य मन में रखकर कुछ भी गहराई से और ध्यान से देखते हैं तो हम वस्तु, व्यक्ति, समूह अथवा घटना को महज देख नहीं रहे होते

बल्कि उसका अवलोकन कर रहे होते हैं। इस इकाई में हम देखेंगे कि अवलोकन की तकनीक किस प्रकार सामाजिक–विज्ञान शोध में प्रयोग की जाती है। आरंभ में हम सामाजिक शोध में अवलोकन की प्रकृति और कार्यक्षेत्र को समझेंगे और फिर अवलोकन के प्रकारों पर चर्चा करेंगे। आगे हम शोध में एक तकनीक स्वरूप अवलोकन के लाभों और कमियों पर भी चर्चा करेंगे।

---

* शैली भाषांजलि, नॉर्थ कैंप यूनिवर्सिटी, गुरुग्राम कृत

6.2 अवलोकन क्या है?

अवलोकन (observation) को साधारणतः देखे जाने से भिन्न समझना होता है। अवलोकन या प्रेक्षण सामाजिक शोध की एक महत्वपूर्ण तकनीक है। यह लोगों को और उनके व्यवहार को उनकी वास्तविक पृष्ठभूमि में समझने तथा सार्थक निष्कर्ष निकालने में शोधकर्ताओं को सक्षम करता है। अन्य शोध तकनीकों से भिन्न, अवलोकन में शोधकर्ता घटनाओं या परिघटनाओं को प्रत्यक्ष देखता है, यथा जिस प्रकार वे वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में अस्तित्व रखती हैं। शोधकर्ता किसी घटना या परिघटना की व्याख्या करने में अपनी अनुभूतियों पर ही निर्भर होता है। अवलोकन अनेक प्रकार के शोध उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है – उसे विषय–वस्तु के दिए गए क्षेत्र का अन्वेषण करने अथवा शोध समस्या संबंधी पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

सरल और उपयोग में आसान होने से इतर, अवलोकन की तकनीक में मानकीकृत प्रक्रियाएँ और प्रमाणित कार्य–प्रणालियाँ ही आती हैं, जिनके अभाव में निष्कर्ष त्रुटिपूर्ण हो सकते हैं। परिकल्पना अवलोकन का मार्गदर्शन कर सकती है। उदाहरण के लिए, यदि हम राजमार्ग पर होने वाली दुर्घटनाओं के कारण जानने में रुचि रखते हों और हमने अस्थायी रूप से एक व्याख्यात्मक परिकल्पना यह प्रतिप्रादित की हो कि दुर्घटनाएँ गति सीमा का उल्लंघन करने से होती हैं तो हमारा ध्यान तेज गति के वाहनों और उनके परिणामों संबंधी अपनी अवधारणा पर केंद्रित हो जाता है। शोध के उद्देश्य दिशा तय कर देते हैं और उन तथ्यों पर ही बल देते हैं जिन पर ध्यान केंद्रित किया जाए। तथापि प्रेक्षक को पूर्णतः अप्रत्याशित और सांयोगिक परिघटनाओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए, जो कि शोध प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। आइए, राजमार्गीय दुर्घटनाओं के उदाहरण पर एक बार फिर विचार करें। अब तेज गति के वाहनों का अवलोकन करते समय शोधकर्ता यह भी गौर कर सकता है कि अधिकांश तेज गति के वाहन 20–25 वर्ष आयु–वर्ग के युवक–युवतियों द्वारा चलाए जाते हैं। तेज गति के वाहन चालकों की आयु संबंधी अतिरिक्त जानकारी हमारे विश्लेषण को समृद्ध कर सकती है।

शोध प्रक्रिया में अवलोकन चार प्रकार से आँकड़ा संग्रहण की अन्य तकनीकों से भिन्न होता है, यथा – (i) अवलोकन सदैव प्रत्यक्ष होता है जबकि अन्य विधियाँ प्रत्यक्ष भी हो सकती हैं और परोक्ष भी; (ii) क्षेत्र अवलोकन किसी वास्तविक परिवेश में ही किया जाता है; (iii) अवलोकन कम संरचित हुआ करता है; तथा (iv) इसमें केवल गुणात्मक (और मात्रात्मक नहीं) अध्ययन किया जाता है, जिसका लक्ष्य व्यक्तियों के अनुभवों और व्यक्ति अपना औचित्य कैसे सिद्ध करते हैं (वृत्तिकी) अथवा व्यक्ति अपने जीवन को कैसे समझते हैं (व्याख्यावाद) संबंधी तथ्यों का पता लगाना होता है।

प्रेक्षकों को उन आँकड़ों को व्यवस्थित और लिपिबद्ध करने के लिए उपकरणों की व्यापक शृंखला अपनानी चाहिए। इससे अवलोकन की प्रक्रिया प्रभावी बनाने और प्रेक्षक की त्रुटियाँ कम करने में मदद मिलती है। कभी–कभी शोधकर्ता को अवलोकन को दिशा प्रदान करने के लिए किसी दिशा–निर्देश की आवश्यकता पड़ती है। ऐसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए वह एक प्रारूप तैयार करता है, जिसमें अवलोकन एवं लिपिबद्ध किए जाने वाले व्यवहार, परिस्थिति और संदर्भ को सूचीबद्ध किया जाता है। इसे 'अवलोकन अनूसची' के नाम से जाना जाता है।

बॉक्स 6.1 जाँच के समय बच्चों का व्यवहार – अवलोकन रिकार्ड (चार्लोट बुहलर एवं जीन क्रॉस कृत)

नाम : | नं.
आयु : 4 ¾ वर्ष | दिनांक :
स्कूल : | कक्षा :

क्र.	व्यवहार		यथोचित	अपरिपक्व	निर्भर	संकोचशील	अंतर्मुखी	आक्रामक या प्रतिरोधी	व्यवस्थित	अन्य	
	प्रतीक्षालय में व्यवहार										
1.	खेल–खिलौनों में निमग्न	1.									
2.	माँ से चिपटा	2.	√	√	√						
3.	आकुल – चहलकदमी करता	3.									
	जाँच कक्ष की ओर जाते हुए व्यवहार										
4.	स्वेच्छापूर्वक माँ को छोड़ता	4.									
5.	जाँचकर्ता का हाथ पकड़ता है	5.	√								
6.	जाँच कक्ष में सामग्री का प्रयोग शुरू होने बाद माँ को जाने देता है	6.	√		√						
7.	जाँचकर्ता के पास अकेला नहीं रह पाता	7.									
8.	संपर्क बनाने के लिए बातचीत शुरू कर देता है	8.									
9.	उत्तर की प्रतीक्षा किए बगैर मुखर बकबक के साथ बातचीत शुरू कर देता है	9.	√						√		चिंतित
10.	केवल प्रत्यक्ष प्रश्नों के उत्तर देता है	10.									
11.	मौन, संकोची बना रहता है	11.									
12.	मौन, प्रतिरोधी बना रहता है	12.									
	जाँच के दौरान व्यवहार										
13.	प्रसन्नतापूर्वक कार्य प्रारंभ होने देता है और रुचिपूर्वक जारी रखता है	13.	√								अल्पावधि
14.	कार्य को कर्तव्य के रूप में लेता है	14.									
15.	सहायता और आश्वासन चाहता है	15.	√		√						
16.	कार्य स्वीकार तो करता है परंतु सहज ही व्याकुल हो जाता है	16.									
17.	अस्थिरता के कारण कार्य स्वीकार नहीं करता	17.									
18.	कुछ कार्य बहुत कठिन कहकर निरस्त करता है – ''मैं नहीं कर सकता''	18.									
19.	कार्यों को प्रतिरोध के साथ निरस्त करता है	19.									
20.	सामग्री हटाने, साफ़ करने में हाथ बँटाता है	20.	√								
21.	मदद से इंकार करता है	21.									अति अनुरूप

स्रोत : गुड एंड हैट, 1952, पृष्ठ सं. 172

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

यह ध्यान देना आवश्यक है कि व्यक्ति कार्यक्षेत्र की स्थिति में क्या अवलोकन करता है। यह किसी डायरी के रूप में हो सकता है, अथवा यह अपने शीर्षकों के नीचे लिखा गया प्रत्येक मद का दैनिक रिकार्ड हो सकता है। मूल टिप्पणियों का बाद में पुनः विश्लेषण कर उचित श्रेणियों में लिख दिया जाता है। ये 'फील्ड नोट्स' एक व्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण अध्ययन में मदद करते हैं और घटनाओं के कुछ संबंध स्पष्ट कर देते हैं।

अवलोकन की संपूर्ति छायाचित्रों से प्रभावपूर्ण रूप से की जा सकती है। अवलोकन के अनुपूरक के रूप में छायाचित्रों का प्रयोग शोधकर्ता की दृष्टि से चूक गए किसी महत्वपूर्ण पहलू की संभावना को दूर कर देता है। साथ ही, छायाचित्र शोधकर्ता के पूर्वाग्रह से मुक्त होते हैं। ये शोध कार्य में विस्तार, प्रामाणिकता और निष्पक्षता का समावेश कर देते है। पॉलीन वी. यंग (1966: 178) के अनुसार, ''जब कभी संभव हो छायाचित्र शृंखलाबद्ध रूप से लगाए जाएँ, जिससे स्थितियों के विभिन्न पहलुओं की व्याख्या हो सके... उदाहरण के लिए, जब तीन मोलोकन पीढ़ियों के छायाचित्रों की तुलना की जाती है तो हम बाहरी रूप–रंग से ही किसी तरह फैसला कर उस सांस्कृतिक परिवर्तन के स्तर का पर्याप्त बोध कर पाते हैं जो दर्शाए गए समूहों की आत्मसात्करण प्रक्रिया के दौरान हुआ।''

शोधकर्ता को अंतर्क्रियाएँ, प्रक्रियाएँ अथवा आचरण होते या किए जाते समय ही देखने चाहिए, जैसे छात्र–अध्यापक अंतर्क्रिया का अवलोकन या फिर वह अंतर्क्रियाओं, प्रक्रियाओं या आचरणों के परिणामों का अवलोकन करें, जैसे यह निर्धारित करने के लिए कि क्या कोई नया खाद्य पदार्थ छात्रों द्वारा पसंद किया गया, वह विद्यालय के काफी हाउस में उनके द्वारा प्लेट में छोड़े गए खाद्य पदार्थ की मात्रा मापे।

बॉक्स 6.2 अवलोकन लिपिबद्ध करना

''मूल दस्तावेज, निस्संदेह, किसी प्रकार की क्षेत्र–अनुभव दैनिकी को कहा जा सकता है। यह किसी डायरी का रूप ले सकता है अथवा उपयुक्त शीर्षकों के नीचे लिखे प्रत्येक मद के दैनिक रिकार्ड हो सकते है। तदनुसार, ''समाजीकरण'' पर चर्चा करने वाले उपशीर्षक हो सकते हैं – माँ और बच्चे से संबद्ध संकट की स्थितियाँ, माँ द्वारा डाँट–डपट, विभिन्न आयु–वर्ग के भाई–बहनों द्वारा छेड़खानी, स्तन्य त्याग, शौच प्रशिक्षण आदि। चूँकि सामाजिक कार्रवाई त्वरित होती है और उसी दिन होती है, अनेक मामलों में सरल टिप्पणियाँ लाभकारी सिद्ध होती हैं। ये ताशनुमा पत्तों पर भद्दी लिखावट, किसी नोटबुक में लिखे मुख्य शब्दों अथवा दिन में विषम परिस्थितियों मे लिखे टंकित नोट्स के रूप में हो सकते हैं ... क्षेत्र कार्य के शुरूआती दौरों में ही विवरण सविस्तार लिख लिए जाने का विशेष महत्व होता है क्योंकि बाद में इस विवरण का अधिकांश भाग धुँधला पड़ जाता है और बिना प्रमाण मान लेना पड़ता है।

''मूल टिप्पणियों को उपशीर्षकों के अंतर्गत लिखा जाए या न लिखा जाए, उनका तदंतर पुनर्विश्लेषण किया ही जाना चाहिए और समुचित श्रेणियों में रखा जाना चाहिए ... तदनुसार, परिकल्पित उद्देश्य समाजीकरण का अध्ययन करना हो सकता है, परंतु टिप्पणियाँ अन्य ''रोचक'' घटनाओं पर संकेंद्रित हो सकती हैं, जैसे झगड़े और अफवाहें, विवाहेत्तर यौन व्यवहार अथवा खान–पान की आदतें। ये टिप्पणियाँ समाजीकरण के प्रति प्रासंगिक हो सकती हैं, परंतु उस उद्देश्य से या फिर किसी बाह्य उद्देश्य से चुनी गई हों अथवा नहीं, उन्हें व्यवस्थित किए जाते समय देखा जा सकता है। इसके अलावा, जब क्षेत्र कार्य प्रगति पर हो तो त्रुटि सुधार करना संभव होता है ...

''शोधकर्ता को अवलोकन और अवलोकन की व्याख्या दोनों को लिपिबद्ध करना लाभदायक लग सकता है।'' (गुड एंड हैट, 1952: 124–125)

6.3 अवलोकन के प्रकार

अवलोकन तीन प्रकार का होता है। आइए, उन पर एक–एक करके चर्चा करें –

असहभागी अवलोकन : इस प्रकार के अवलोकन में सहभागी अपने समूह का अवलोकन मात्र करता है – क्या काम चल रहा है, उसमें उसका कोई हस्तक्षेप नहीं होता। वह अवलोकन की पूरी अवधि में बाहरी व्यक्ति के रूप में बना रहता/रहती है। इससे वह अवलोकन लिपिबद्ध किए जाने में निष्पक्ष रह पाता है। ऐसी संभावना होती है कि अधीन होने वाले लोगों को इस बात का भान हो कि उन्हें देखा जा रहा है। इसे 'अपरोक्ष अवलोकन' कहा जाता है। दूसरी संभावना यह होती है कि अध्ययन के अधीन लोग इस बात से अनभिज्ञ हों कि उनका अवलोकन किया जा रहा है। इस 'प्रच्छन्न अवलोकन' कहा जाता है।

प्रच्छन्न अवलोकन (covert observation) का लाभ यह है कि यदि लोगों को यह ज्ञान न हो कि उन्हें देखा जा रहा है, वे कहीं अधिक स्वाभाविक रूप से आचार–व्यवहार करते हैं। तथापि, प्रच्छन्न अवलोकन नैतिकता की दृष्टि से अनुचित हो सकता है। यह तकनीक, बहरहाल, शोध परिस्थितियों को समझने के लिए सीमित संभावना ही व्यक्त करती है। असहभागी अवलोकन से घटनाओं एवं समूह या समुदाय के सदस्यों की गतिविधियों संबंधी अंतर्दृष्टिपूर्ण सामाजिक–सांस्कृतिक लेखा–जोखा भ्रांतिजनक ही रहेगा।

सहभागी अवलोकन : किसी शोधकर्ता को तब सहभागी अवलोकन करता हुआ माना जाता है जब वह किसी जनसमुदाय के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में भाग लेता है और किसी सामाजिक परिघटना अथवा समस्या को समझता है। चूँकि सहभागी अवलोकन का अर्थ किसी सामाजिक परिवेश के क्रियाकलाप और प्रसंग में सन्निहित होना होता है, इसमें शामिल होता है –

(i) मानव अनुभव के जिस भी पहलू का आप अध्ययन करना चाहते हैं उस अवस्थिति में प्रवेश करना;

(ii) भागीदारों के साथ घनिष्ठता कायम करना; तथा

(iii) वांछित आँकड़े पाने के लिए परस्पर क्रिया करते हुए पर्याप्त समय बिताना।

इस प्रकार, सहभागी अवलोकन शोधकर्ता को व्यक्तियों के किसी समूह विशेष, उनके मूल्यों, उनकी धारणाओं और जीवन शैली के साथ गहरी सूझबूझ और मेल–जोल विकसित करने में सक्षम करता है। उस समूह के साथ रहते हुए उसका एक हिस्सा बनकर अच्छा–खासा वक्त बिताने से वह विश्लेषण के लिए अनुभवों, वार्तालापों और अपेक्षाकृत असंरचित साक्षात्कारों की व्यापक श्रृंखला हासिल करने में सक्षम हो जाता है।

इस प्रकार शोधकर्ता उनके जीवन का प्रत्यक्ष लेखा–जोखा निरूपित करने और नवीन परिज्ञान प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं।

यह शोध विधि मानवशास्त्री ब्रोनिस्लाव मालिनोवस्की और फ्रांज बोअस द्वारा आरंभ की गई, परंतु बाद में अनेक समाजशास्त्रियों द्वारा एक प्राथमिक शोध विधि के रूप में अपना ली गई। आजकल सहभागी अवलोकन विश्व भर में गुणात्मक समाजशास्त्रियों द्वारा इसी रूप में प्रयोग की जाती है। इस विधि में अपेक्षित होता है कि शोधकर्ता उस स्थल पर जाए जहाँ वे लोग रहते हैं जिनका वह अध्ययन करना चाहता है। शोधकर्ता से अधिमानतः उन

लोगों के बीच रहने (प्रायः 12 से 18 माह), उनकी भाषा बोलने, उनकी रोजमर्रा की गतिविधियों में भाग लेने और मानवशास्त्रीय तकनीकों (उदाहरणार्थ, जनगणना सर्वेक्षण, प्रश्नावलियों, साक्षात्कार) का प्रयोग कर सूचना एकत्र करने की अपेक्षा की जाती है। सहभागी अवलोकन का लाभ यह है कि शोधकर्ता अपने दृष्टिकोण से लोगों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में गहरी पैठ बना सकता है। उदाहरण के लिए, शोधकर्ता के मस्तिष्क में इस संबंध में किसी भी प्रश्न का उत्तर, जैसे कि वे किसी अनुष्ठान विशेष को क्यों करते हैं, उन लोगों द्वारा वहीं के वहीं दे दिया जाता है।

सहभागीवत् अवलोकन : यह ध्यान देना आवश्यक है कि पूर्णतः असहभागी अवलोकन अत्यंत दुष्कर होता है। सामाजिक जीवन में बिना किसी भागीदारी के उसे समझा–बूझा नहीं जा सकता। 'सहभागीवत् अवलोकन' से तात्पर्य होता है – वह स्थिति जब शोधकर्ता अपने अध्ययन किए जाने वाले जीवन और संस्कृति में चयनात्मक रूप से भाग लेता है। कुछ साधारण गतिविधियों में वह सक्रिय रूप से भागीदार होता है और कुछ अन्य में वह निष्क्रिय रूप से दूर से अवलोकन करता है।

बोध प्रश्न 1

1. आँकड़ा संग्रहण की तकनीक स्वरूप अवलोकन के कुछ अभिलक्षण संक्षेप में बताएँ।

   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....

2. छायाचित्र किस प्रकार अवलोकन के अनुपूरक के रूप में काम करते हैं? स्पष्ट करें।

   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....

6.4 सहभागी अवलोकन पर आधारित अध्ययन

सहभागी अवलोकन अनेक वर्षों से मानवशास्त्रीय और समाजशास्त्रीय दोनों प्रकार के अध्ययनों का एक प्रमाण चिह्न रहा है। यहाँ हम ऐसे दो महत्वपूर्ण अध्ययनों का उल्लेख करेंगे जो सहभागी अवलोकन पर ही आधारित हैं –

6.4.1 आर्गोनॉट्स ऑफ द वैस्टर्न पैसिफिक

पॉलिश–ब्रिटिश मानवशास्त्री ब्रोनिस्लाव मालिनोवस्की ने न्यू गिनी के पूर्वी तट पर ट्रोब्रिएंड द्वीपसमूह में क्षेत्र कार्य आयोजित किया। उनका यह क्षेत्र कार्य इस अवधारणा के इर्दगिर्द

केंद्रित था कि शोधकर्ता को उस संस्कृति में यथासंभव पूरी तरह सहभागी होना चाहिए जिसका अध्ययन किया जा रहा हो, ताकि वह अपनाई जाने वाली प्रथाओं का सर्वोत्तम तरीके से अवलोकन कर उन्हें लिपिबद्ध कर सके। मालिनोवस्की ने इस द्वीपसमूह पर दो चरणों में 23 महीने बिताए। उनकी प्रसिद्ध कृति है – *अर्गोनॉट्स ऑफ द वैस्टर्न पैसिफिक*, जिसमें उन्होंने ट्रोब्रिएंड द्वीपसमूह के अपने प्रवास के दौरान वहाँ के लोगों के सामाजिक संबंधों, आर्थिक मामलों तथा शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का अवलोकन प्रस्तुत किया है। ट्रोब्रिएंड द्वीपसमूह संबंधी अपने अध्ययन में मालिनोवस्की ने ''अपनी दुनिया के प्रति दृष्टिकोण को साकार करने के लिए मूल निवासी के दृष्टिकोण को, जीवन से उसके संबंध को, समझने'' का प्रयास किया।

ट्रोब्रिएंड द्वीपसमूह संबंधी लेखक का मानवजाति वर्णन में कुला रिंग (बाजू के कंबु और गले के हार का जटिल अंतर–द्वीपीय विनिमय) की पेचीदा व्यवस्था का उल्लेख किया है और वह पारस्पारिकता और आदान–प्रदान के परवर्ती सिद्धांतों के लिए बुनियाद बन गई। मेलानेशिया में प्रति वर्ष कंगन और हारों का आनुष्ठानिक विनिमय होता था, जिसमें अनेक द्वीपों का मंडल शामिल होता था। ये वस्तुएँ न तो विशिष्ट रूप से महँगी सामग्री से बनी होती थीं और न ही उत्कृष्ट शिल्प–कौशल दर्शाती थीं। इसी बात ने मालिनोवस्की को प्रेरित किया कि वह अन्वेषण करे कि इस समारोह का द्वीपवासियों के लिए क्या महत्व है। मालिनोवस्की की पुस्तक ने इस प्रकार की पहले सराहना से वंचित रही संस्कृतियों की ओर उनका ध्यान खींचा जो विकसित समाज बनाकर रहते थे और यह दिखा दिया कि सभी लोगों से – वे प्रारंभ में चाहे कितने भी ''आदिम'' या विचित्र लगते हों – मानव स्वभाव और मानव समाज के विषय में काफी कुछ सीखा जा सकता है।

6.4.2 स्ट्रीट कॉर्नर सोसाइटी

अमेरिकन समाजशास्त्री डब्ल्यू. एच. ह्वाइट की अग्रणी पुस्तक 'स्ट्रीट कॉर्नर सोसाइटी' बोस्टन नामक उपनगर स्थित एक इतावली मलिन बस्ती के सहभागी अवलोकन पर आधारित है। यह संभवतः समाजशास्त्र में सहभागी अवलोकन पर सर्वाधिक उल्लिखित पुस्तक है। सन 1930 के दशक के उत्तरार्ध में विलियम एच. ह्वाइट बोस्टन के निकट निम्न आय वर्ग के लोगों की इस बस्ती में रहने चले गए। लगभग चार वर्ष लेखक ''आवारा लड़कों'' के सामाजिक मंडल का सदस्य रहा, जैसा कि उसने अपनी पुस्तक *स्ट्रीट कॉर्नर सोसाइटी* में लिखा है। ह्वाइट ने इन लोगों को अपना परिचय दिया और उनकी बातचीत, गेंदबाजी व अन्य फुर्सत के कामों में हिस्सा लिया। उसका लक्ष्य इन लोगों द्वारा स्थापित इस समुदाय के विषय में अधिक गहराई से जानना था। जब ह्वाइट समुदाय के मुखिया की बात सुनता तो वह ''प्रश्नों के उत्तर याद कर लेता। यदि मैं अपनी जानकारी महज एक साक्षात्कार के आधार पर एकत्र कर रहा होता तो मुझे प्रश्न पूछने का व्यावहारिक ज्ञान भी न हो पाता''। ह्वाइट की पुस्तक विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी क्योंकि उन दिनों शिक्षा जगत् को गरीबों के विषय में किंचित् ही प्रत्यक्ष ज्ञान था, और वह समाज सेवी अभिकरणों, अस्पतालों एवं न्यायालयों के रिकार्ड में दर्ज जानकारी पर निर्भर रहा करता था (पी. एडलर व अन्य, 1992)।

बॉक्स 6.3 सहभागी अवलोकन : कुछ कठिनाइयाँ

उस मानवशास्त्री की तुलना में जो विश्व के किसी सुदूरवर्ती स्थान पर आदिम जाति का अध्ययन करता है, एक आधुनिक अमेरिकी समुदाय के छात्र को स्पष्टतः भिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सबसे पहले उसका वास्ता साक्षर लोगों से पड़ता है। यह तय है कि उस समुदाय के कुछ लोग, और शायद उनमें से अधिकांश, उसकी शोध रिपोर्ट को अवश्य पढ़ेंगे। यदि वह उस जिले का नाम छिपाता है, जैसा कि मैंने किया है, अनेक बाहरी व्यक्ति प्रतीयमानतः जान ही नहीं पाएँगे कि अध्ययन वास्तव में कहाँ कराया गया ... जिले के लोग, निश्चय ही, जानते हैं कि यह उनके विषय में है, और बदले गए नाम भी उनके लिए लोगों को परदे में नहीं रख सकेंगे। उन्हें शोधकर्ता याद है और वे उन लोगों को जानते हैं जिनसे यह जुड़ा हुआ हैय साथ ही, वे विभिन्न समूहों के विषय में काफी कुछ जानते हैं, जिससे किसी भी व्यक्ति के विषय में गलत लिखे जाने का अवसर बहुत कम है। ऐसी स्थिति में शोधकर्ता के कंधों पर भारी जिम्मेदारी होती है। वह चाहेगा कि उसकी पुस्तक जिले के लोगों का कुछ भला कर सके; कम से कम वह इस संभावना को पूरी तरह स्वीकारते हुए कि उसकी पुस्तक से कुछ लोगों को पीड़ा पहुँच सकती है, उन्हें क्षति पहुँचने के अवसर न्यूनतम करने हेतु कदम उठाना चाहेगा (फूट, 2012: 342)।

क्रियाकलाप 1

किसी ऐसे सुलभ सामाजिक अथवा सांस्कृतिक स्थल या आयोजन को चुनें जिससे आप परिचित न हों। वहाँ जाएँ और पूर्णतः दृश्य अवलोकन करें – देखें वहाँ कौन है (जनसांख्यिकीय रूप से); सामाजिक भिन्नताओं के चिह्न (आदर–सम्मान, स्थान प्रयोग, भेदक वस्त्र, बिल्ले आदि) पर गौर करें और देखें कि लोग एक दूसरे के साथ कैसे व्यवहार करते हैं। देखें कि दृश्य के कौन–से भाग समझने में आसान हैं और कौन–से भाग एक बाहरी व्यक्ति के रूप में आपके लिए अस्पष्ट हैं। इन मुद्दों पर स्पष्टता हेतु आपको किस प्रकार के अतिरिक्त आँकड़ों की आवश्यकता होगी – साक्षात्कार, द्वितीयक स्रोत, अथवा अतिरिक्त अवलोकन?

6.5 अवलोकन तकनीकों के गुण–दोष

आँकड़ा संग्रहण की अवलोकन विधि के कुछ गुण निम्नवत् बताए जा सकते हैं –

i) यह आँकड़ा संग्रहण की एक सरल विधि है।

ii) अवलोकन वास्तविक और प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित विविध प्रकार की परिघटनाओं का अध्ययन करने का सबसे सरल साधन है।

iii) यह प्रेक्षक को कोई व्यवहार विशेष किए जाते समय ही उसे देखने व लिपिबद्ध करने में सक्षम करती है।

iv) इस विधि से एकत्र किए गए आँकड़े अपेक्षाकृत अधिक सटीक और विश्वसनीय होते हैं क्योंकि वे दृष्टि की प्रत्यक्ष अनुभूति पर आधारित होते हैं। असहभागी अवलोकन, बहरहाल, अध्ययन किए गए सामाजिक प्रसंग का अर्थ संभवतः इतनी गहराई से न बता सके। यदि यह संदर्भगत बोध आवश्यक हो तो सहभागी अवलोकन की ही आवश्यकता होगी।

v) यह एक बार में ही समष्टि के बड़े आकार पर आँकड़े एकत्र करने में सक्षम करती है।

vi) असहभागी अवलोकन शोधकर्ता के प्रति लोगों के सहयोग पर निर्भर नहीं करता।

vii) सहभागी अवलोकन – जिसमें शोधकर्ता लोगों में शामिल होकर किसी समूह का नियमित गतिविधियों को देखते हैं ताकि उन्हें उस प्रसंग में ही देखा जा सके – शोधकर्ता को किसी सहज ही होने वाली सामाजिक गतिविधि का अध्ययन करने देता है। इससे उस परिवेश में किसी परिघटना, परिस्थिति और/अथवा वातावरण तथा सहभागियों के व्यवहार की गहन और सुस्पष्ट समझ विकसित होती है।

अध्ययन एवं आँकड़ा संग्रहण की विधि के रूप में अवलोकन, बहरहाल, अनेक नीतिपरक प्रश्नों को जन्म देता है। विशेष रूप से, सहभागी अवलोकन सभी सामाजिक विज्ञान शोध विधियों में एक विवादास्पद विधि रही है। इसका कारण निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है –

i) शोधकर्ता अध्ययन के अधीन लोगों के साथ अपेक्षाकृत एक लम्बी समयावधि तक रहता है, उनकी दैनिक गतिविधियों में भाग लेता है, उन्हें बहुत ही नजदीक से देखता है, और लोगों के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन के अंतरंग पहलुओं तक पहुँच बना लेता है। साथ ही, उसके पास प्रेक्षित घटनाओं, परिघटनाओं एवं गतिविधियों को विश्वसीय रीति से लिपिबद्ध करने का काम होता है। बर्नार्ड (1988) का कहना है कि अनौपचारिक वार्तालाप के दौरान जिसे स्पष्टतः 'गप' माना जा सकता हो, शोधकर्ता के लिए आँकड़ों का हिस्सा बन सकता है। इस प्रकार के मुद्दे सामाजिक विज्ञान शोध के नीतिपरक सरोकारों का हिस्सा बन जाते हैं। प्रायः यह प्रश्न किया जाता है कि क्या शोधकर्ता लोगों से आँकड़े एकत्र करते समय उनको यह बताते हैं कि उनसे प्राप्त सूचना का क्या प्रयोग किया जाएगा?

ii) इसके अलावा, फील्ड नोट्स के माध्यम से एकत्रित सूचना के प्रकाशन के विषय में भी नीतिपरक प्रश्न उठते हैं। इसी से संबद्ध है – फील्ड नोट्स में पहचाने गए सहभागियों की अनामिकता का संरक्षण। कहा जाता है कि कंम्यूटरीकरण के साथ अनामिकता बनाए रखना किसी और माध्यम की अपेक्षा कहीं अधिक सरल होता है।

iii) सहभागी अवलोकन के दोष के विषय में एक अन्य चिंता यह व्यक्त की जाती है कि क्षेत्र कार्य के दौरान उत्तरदाताओं अथवा सूचनादाताओं के साथ शोधकर्ता द्वारा विकसित भावनात्मक संबंध की सीमा क्या हो? सहभागी अवलोकन के दौरान शोधकर्ता प्रायः इतने निमग्न हो जाते हैं कि वे अपने अवलोकन में निष्पक्षता का क्षय करने लगते हैं। आलोचक तो यहाँ तक प्रश्न करते हैं कि 'सहभागी अवलोकन वस्तुतः कितना मान्य है?' उनका तर्क है कि इस विधि में निष्पक्षता का अभाव होता है। शोधकर्ता के लिए व्यक्तिपरकता से बचना और अध्ययन के अधीन समूह के पक्षपाती विचारों को रूप प्रदान करना बहुत मुश्किल होता है।

iv) साथ ही, शोधकर्ता यह भी निर्णय लेते हैं कि क्या महत्वपूर्ण व रिकॉर्ड करने लायक है और क्या नहीं। अतः यह शोधकर्ता के मूल्यों पर ही निर्भर करता है। कुछ अतिशय उदाहरणों में शोधकर्ता रिवाज की नकल करने लगते हैं, जिसमें वे उत्तरदाताओं के साथ सहानुभूति संबंध बना लेते हैं और उनकी जीवन शैली के विश्लेषण में किसी भी नकारात्मकता को नहीं आने देते हैं।

v) शोधकर्ता के व्यक्तिगत कारक सहभागी अवलोकन में अति महत्वपूर्ण हो जाते हैं आयु, लिंग, प्रजाति, संजातीय पृष्ठभूमि, स्वयं की प्रस्तुति आदि कारक अवलोकन की प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, डीवेट एवं डीवेट (2002) लिखते हैं कि पुरुष और महिला शोधकर्ताओं को भिन्न–भिन्न सूचना सुलभ होती है क्योंकि उन्हें अलग–अलग लोग, परिवेश और ज्ञान के स्रोत सुलभ होते हैं।

vi) शोधकर्ता की ओर से अध्ययन किए गए समूह अथवा समुदाय के सांस्कृतिक पहलुओं की बुनियादी समझ किसी भी आदर्श प्रेक्षक के लिए अनिवार्य हो सकती है। शोधकर्ता सैद्धांतिक प्राधार और जाँच किए जाने के विचार से पूर्व–निर्धारित प्रकल्पनाओं के साथ ही अवलोकन के लिए आगे बढ़ता है। कभी–कभी ये परिकल्पनाएँ इतनी निश्चित सिद्ध होती हैं कि शोधकर्ता कार्यक्षेत्र में अन्य समानतः महत्वपूर्ण घटनाओं को अनदेखा कर देता है। यह एक व्यापक रूप से सिद्ध अवधारणा है कि सामाजिक वैज्ञानिक अवलोकन में अपने मूल्यों, विचारों एवं धारणाओं को थोपने से कितना भी बचते रहें, वे सामाजिक वास्तविकता का निष्पक्ष रूप से प्रग्रहण करने में विफल ही रहते हैं।

vii) सहभागी अवलोकन विधि समय लेने वाली है और महँगी पड़ती है। इसके लिए विश्वास जीतने और घनिष्ठता कायम करने में समय लगता है, और इस वजह से इससे पहले कि शोधकर्ता की उपस्थिति में उत्तरदाता तनावमुक्त होना शुरू हों, कई दिन, सप्ताह या फिर महीने तक गुजर जाते हैं।

viii) किसी के क्षेत्र/समुदाय में प्रवेश पाना भी एक समस्या हो सकती है क्योंकि कई लोग संभवतः इस प्रकार शोधकार्य किए जाने से असहज महसूस करें, और जहाँ प्रच्छन्न शोध से सरोकार हो, शोधकर्ता अपनी ही विशेषताओं तक सीमित रहते हैं। चुनौती, बहरहाल, दूसरों के व्यवहार प्रतिमान को भंग किए बिना किसी परिवेश में प्रवेश पाना ही है। किसी समूह, संगठन अथवा उपसंस्कृति का अंदरूनी सदस्य बनने में समय भी लगता है और प्रयास भी निरंतर करना पड़ता है। शोधकर्ताओं को ऐसा कुछ बन जाने का स्वाँग करना पड़ता है जो वे नहीं होते। इस प्रक्रिया में भूमिका निभाना, संपर्क बनाना, मेल–जोल का जाल बिछाना, अथवा किसी जॉब के लिए आवेदन देना शामिल होता है। शोधकर्ता को किसी ढाबे में वेटर के रूप में काम करना पड़ सकता है या फिर अनेक सप्ताह तक बेघर व्यक्ति के रूप में रहना पड़ सकता है, अथवा अपनी नियमित गश्त के दौरान पुलिसकर्मियों द्वारा बुलाए जाने पर उनके साथ घुड़सवारी करनी पड़ सकती है। अकसर ये शोधकर्ता अपने अध्ययनाधीन जनसमुदाय के साथ समेकित रूप से घुल–मिल जाने का प्रयास करते हैं और यदि उनको लगता हो कि इससे उनके शोधकार्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा तो वे अपनी वास्तविक पहचान उजागर नहीं करना चाहेंगे। एक बार किसी समूह में शामिल हो जाने के बाद कुछ शोधकर्ता यह स्वाँग करते हुए महीने या फिर साल तक गुजार देते हैं कि वे अवलोकन किए जा रहे लोगों में से ही एक हैं। सहभागी अवलोकन के दौरान एकत्र जानकारी मुख्यतः गुणात्मक होती है, न कि मात्रात्मक, तथा अंतिम परिणाम प्रायः वर्णनात्मक होता है या फिर व्याख्यात्मक।

ix) क्षेत्र कार्य अपने नितांत स्वभाव के अनुसार बहुत लम्बे समय तक चलने वाले ओर गहन शोध को लेकर चलता है, जो कि प्रायः किसी एकल विद्वान द्वारा अकेले ही किया जाता है। इस रूप में शोध के अंतर्गत समष्टि का एक बहुत

छोटा–सा हिस्सा ही कार्य करने के लिए लिया जा सकता है – आमतौर पर कोई एकल गाँव अथवा लघु समुदाय। हम कभी यह पक्के तौर पर नहीं कह सकते कि क्या जो मानवशास्त्री या समाजशास्त्री ने क्षेत्र कार्य के दौरान अवलोकन किया वह वस्तुतः वृहत्तर समुदाय (यथा, अन्य गाँवों, क्षेत्र अथवा देश) में बहुत आम होता है अथवा वह अपवाद है।

x) क्षेत्र कार्य का एक अन्य महत्वपूर्ण दोष यह है कि हम कभी भी निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते कि हम जो सुन रहे हैं वह आवाज शोधकर्ता की है या फिर अध्ययन किए जा रहे लोगों की। वास्तव में, हमारा लक्ष्य अध्ययनाधीन लोगों के विचारों का प्रतिनिधित्व करना ही होता है, परंतु ऐसा सदा संभव नहीं होता कि शोधकर्ता – जानबूझकर अथवा अनजाने में – वही चयन करे जो उसकी टिप्पणियों में लिखा जाएगा और उसकी पुस्तकों या लेखों के पाठकवर्ग के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। चूँकि शोधकर्ता के संस्करण के सिवा कोई अन्य संस्करण हमारे लिए उपलब्ध नहीं होता, पक्षपात अथवा त्रुटि की गुंजाइश सदा बनी रहती है।

बोध प्रश्न 2 [अपने उत्तर दिए गए स्थान में ही लिखें।]

1. ऐसे कुछ नीतिपरक सरोकारों को सूचीबद्ध करें जो सहभागी अवलोकन के दौरान सामने आ सकते हैं।

   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....

2. कौन–से दो क्षेत्र कार्य अध्ययन आपको सर्वाधिक रुचिकर लगते हैं? अपना उत्तर सकारण लिखें।

   ....
   ....
   ....
   ....
   ....
   ....

6.6 सारांश

अवलोकन विभिन्न शास्त्रविद्याओं में गुणात्मक शोध के तहत लोगों, प्रक्रियाओं और संस्कृतियों के विषय में आँकड़े एकत्र करने के लिए एक साधन स्वरूप प्रयोग किया जाता रहा है। लोगों के व्यवहार को उनके दैनिक सामाजिक परिवेश के संदर्भ में समझने के लिए एक अत्यावश्यक और उपयोगी साधन अवलोकन, विशेष रूप से सहभागी अवलोकन, सामाजिक शोध की एक विधि के रूप में सिद्धांत एवं परिकल्पना विकास हेतु अनेक अनन्वेषित और अस्पष्टीकृत सामाजिक परिघटनाओं एवं आधार को समझने में सक्षम करता है।

आँकड़ा संग्रहण की अवलोकन विधि क्षेत्र कार्य की प्रक्रिया के दौरान साक्षात्कार और संगणना या प्रतिचयन जैसी अन्य विधियाँ अपनाती है। प्रमुख सूचनादाताओं के साथ बातचीत करते समय शोधकर्ता द्वारा व्यापक रूप से अनौपचारिक साक्षात्कार तकनीक अपनाई जाती है। सुझाव दिया गया है कि अवलोकन विधि सदा अकेले ही न अपनाई जाए, बल्कि जब इसे अन्य तकनीकों के साथ अपनाया जाता है तो यह व्यापक परिणाम देती है।

कुछ कमियों को बहरहाल, कम करके नहीं आँका जा सकता, जैसे विश्वसनीयता और निरूपकता का संभावित अभाव तथा अध्ययन को दोहराने में सक्षम न होना। अधिक निष्पक्ष निष्कर्ष पाने के लिए मात्रात्मक सूचना का समर्थन सार्थक सिद्ध हो सकता है।

6.7 संदर्भ

Adler, P. A. and P. Adler. 1987. *Membership Roles in Field Research*. Newbury Park, CA: Sage Publications.

Bogdewic, S.P. 1999. "Participant Observation" In BF Crabtree and WL Miller (Eds.) *Doing Qualitative Research* (2nd Edition). Thousand Oaks, CA: Sage Publications.

Goode & Hatt. 1952. *Methods in Social Research*. Mc Graw Hill Book Company.

Lofland, J. & Lofland, L.H. 1995. *Analyzing Social Settings*. (3rd Edition). NY: Wadsworth Publication Company.

Whyte, William Foote. 2012. *Street Corner Society: Social Structure of an Italian Slum*. The University of Chicago Press.

Young, Pauline. 1966. *Scientific Social Surveys and Research*. Englewood Cilffs: Prentice Hall.

6.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1. अवलोकन के कुछ अभिलक्षण हैं – (i) व्यवहार का अवलोकन वास्तविक परिवेश में किया जाता है; (ii) यह सहभागियों के सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती प्रमुख घटनाओं को समझने में सक्षम करता है; (iii) यह स्वयं प्रेक्षित व्यक्ति के दृष्टिकोण से वास्तविकता को कम करके आँकता है; तथा (iv) यह अध्ययन में एकत्रित आँकड़ों की तुलना अन्य अध्ययनों के आँकड़ों से करके सामाजिक जीवन में नियमितताओं और पुनरावृत्तियों की पहचान करता है।

2. अवलोकन के अनुपूरक के रूप से छायाचित्रों का प्रयोग शोधकर्ता की नजर से चूक गए किसी पहलू की संभावना पर काबू पा लेता है। साथ ही, छायाचित्र शोधकर्ता के पूर्वाग्रह से मुक्त होते हैं। ये शोध कार्य में सूक्ष्म विवरण, प्रामाणिकता और निष्पक्षता का समावेश करते हैं। इनको अवलोकन प्रक्रिया को यथासंभव सटीक बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। ये आँकड़ों को व्यवस्थित कर लिपिबद्ध करने में सहायक होते हैं, जो कि उसके अनुभव का हिस्सा होते हैं। ऐसा करके अवलोकन की प्रक्रिया अधिक प्रभावी बन जाती है और त्रुटियाँ काफी हद तक कम हो जाती हैं।

बोध प्रश्न 2

1. वे नीतिपरक सरोकार जो सहभागी अवलोकन के दौरान सामने आते हैं, इस प्रकार बताए जा सकते हैं – (a) शोधकर्ता इतने निमग्न हो सकते हैं कि वे अपने अवलोकन में निष्पक्षता का ह्रास होने दें; (b) फील्ड नोट्स के माध्यम से एकत्रित जानकारी का प्रकाशन होने से सहभागी की पहचान छिपी नहीं रहती; (c) प्रायः यह प्रश्न उठता है कि क्या शोधकर्ता लोगों से आँकड़े एकत्र करते समय उनको यह बताते हैं कि उनसे प्राप्त सूचना का क्या प्रयोग किया जाएगा; तथा (d) शोधकर्ता के व्यक्तिगत कारक – जैसे आयु, लिंग, प्रजाति, संजातीय पृष्ठभूमि – सहभागी अवलोकन को प्रभावित करते हैं अथवा अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY